



उदय प्रकाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन

डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद

सहयोगी अध्यापक
कला महाविद्यालय, बिडकीन
ता. पैठण
जि. छत्रपती संभाजीनगर

प्रस्तावना :

बीसवी सदी के अंतिम दशक के मुख्य कहानीकारों में उदय प्रकाश का नाम बहुत ही आदर से लिया जाता है। उन्होंने आधुनिक समाज के परिस्थितीजन्य भावभूमि को अपनी तटस्थ दृष्टि से अपने साहित्य में दर्शाया है। वे एक सफल कहानीकार के साथ उत्कृष्ट कवि और अनुवादक के रूप में उभरकर आये हैं। उदय प्रकाश के कहानियों में रोचकता तथा यथार्थता भरने के लिए अपनी लेखनी को तटस्थता भरा ताना-बाना बुना दिखाई देता है। उनकी 'दरियाई घोड़ा', 'और अंत में प्रार्थना' तथा 'मोहनदास' कहानी संग्रह अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। आमजन की संसारिक स्थिति का चित्रण कराने की उपलब्धि उन्हें हासिल हुई है। उन्होंने 'दरियाई घोड़ा' में अस्पताली वातावरण और बिमार पिता की खिदमत करते बेटी की कथा को एक भावनिक स्तरपर लाकर खड़ा किया गया है। जैसे हर एक व्यक्ति के जीवन में यह प्रसंग एक बार क्यों ना होता ही है। उदय प्रकाश के कहानी में व्यक्ति द्वन्द, शोषण का विरोध, यथार्थवादिता और बेबाकी नजर आती है। वे लिखते हैं -

‘बचना हो तो बचाया जाने चाहिए।

गाँव में खेत जंगल में पेड़, शहर में हवा।

पेड़ों में घोंसले, अखबारों में सच्चाई,

राजनीति में नैतिकता, प्रशासन में मनुष्यता,

दाल में हल्दी।¹



उदय प्रकाशजी उक्त काव्य पंक्तियों में अपनी व्यथा को दर्शाते हुए अपने मन की बात पाठक के सम्मुख रखना चाहते हैं की अब खेतों को बचाना होगा। विकास के नाम पर जंगल के पेड़ कट रहे हैं। शहर को हवा सांस लेने योग्य नहीं रही। अखबारों में जो सच्चाई छपनी चाहिए वह भी बची रहे और सबसे महत्त्वपूर्ण है राजनीति में नैतिकता के साथ सरकारी प्रशासन में मनुष्यता की काफी आवश्यकता है। इस बात पर वे जोर देते हैं।

सहृदय उदय प्रकाशजी ने कई कविताओं के माध्यम से अपनी बात आम जन तक साँझा की है। उनके इसी उपलब्धि भरे साहित्य के कारण वे आधुनिक कवियों में अपनी जगह बना बैठे हैं।

उदय प्रकाश का व्यक्तित्व :

उदय प्रकाशजी का जन्म 1, जनवरी 1952 में मध्यप्रदेश के जिला शहडोल (अब अनुपपुर) के छोटे से गाँव सीतापुर में हुआ है। उदय प्रकाशजी का बचपन आम भारतीय बालको के समान गुजरा। वे थोड़े शरारती स्वभाव के बालक थे। उन्हें माता - पिता का प्यार तो मिला पर दुर्भाग्य वश उनका साथ जादा दोनों तक टिक नहीं पाया। माता-पिता का साया उनके बचपन में ही उन से बिछुड़ गया। उदय प्रकाश का परिवार बड़े परिवारों में से था, माता-पिता, भाई-बहन के साथ उनके परिवार में दादा-दादी और चाचा-चाची तथा उनके बच्चे भी रहते थे। दुर्भाग्य वश माँ के गुजर जाने के बाद पिता को भी जानेलेवा बिमारी कैंसर हो गयी। बचपन में ही पिता की सेवा करते हुए वे इतने मग्न हो गये की उस समय की सारी बातों को याद करते उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'दरियाई घोड़ा लिखी।

उदय प्रकाशने पांचवी कक्षा तक की शिक्षा अपने गांव में की, आगे की शिक्षा नौवी तक वे पड़ोस के गांव में वे पढ़े बाद में वे सागर विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर सके। स्नातकोत्तर शिक्षा में वे एम.ए. हिंदी की उपाधि पाने के बाद उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि के लिए भी दाखिला लिया पर उनका संशोधन कार्य अधूरा रह गया।

लेखन के साथ उदय प्रकाशने अध्यापक का कार्य किया, साथ ही साप्ताहिक दिनमान के संपादक, टेलिविजन कंपनी में कार्य, पटकथा लेखन आदि कार्य करते रहे हैं।

अनुशासन प्रिय, स्वाभिमानी, अच्छा व्यवहार करनेवाले, अजातशत्रु व्यक्तित्व के धनी उदय प्रकाश अपने मानसिक पटल पर आनेवाले विचारों को अपने भुतकालीन आये अनुभव के साथ



जोड़ते हुए लेखन कार्य करते दिखाई देते हैं। लेखक की विशेषता को संशोधन - कार्य की कसौटी पर जोड़ने पर यह जान पड़ता है की उदय प्रकाश का व्यक्तित्व उनके कलम पर अत्याधिक प्रभाव बनाता गया है। वे अपने भोगे हुए बातों को अधोरेखीत कर रहे हो। काम में लगन और स्वच्छता उनकी प्रमुख विशेषता रही है। उनका लेखन आम भारतीय व्यक्ति का जिवंत दस्तावेज है।

उदय प्रकाश का कृतित्व :

उदय प्रकाश ने आठ से अधिक कहानी संग्रह के साथ, चार कविता संग्रह, अनुवाद कार्य और फिल्मों के लिए लेखन तथा पत्रिकाओं के लिए संपादन कार्य भी किया।

उदय प्रकाश की पहली कहानी 'बिजली का बल्ब और मौत का फासला' है पर इससे अधिक उनकी 'दरियाई घोड़ा' कहानी प्रसिद्ध के शिखर पर पहुँची इसी नाम से उनका प्रथम कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। 'दरियाई घोड़ा' कहानी में लेखकने अपने स्वअनुभवों को कहानी के माध्यम से आम समाज के सम्मुख रखा। पिता के बिमारी में उनकी सेवासुश्रुता करते वक्त अस्पताल के वातावरण को उन्होंने बड़ी बारिकी से दर्शाया है। इस कहानी को पढ़ते हुए अस्पताली वातावरण की सच्चाई का चित्र हमारे भी स्मृति पटल पर उभरते है। ऐसी ही कई कहानियाँ उनकी पहचान बन बैठी है। उनकी पुतला मौसाजी, 'दहु तिवारी, गणनाधिकारी, 'झ-जेड,' अलिफ, जगपति और कर्फ्यू यह कहानीयाँ मध्यम वर्गीय परिवार की अपनी अलग-अलग व्यथा कथा का प्रतिनिधित्व करती है।

उदय प्रकाश के 'तिरिछ' कहानी संग्रह में 'नेलकटर' डिबिया और उपराध कहानीयों द्वारा समकालीन समाज की भाव-भंगीमा को रेखांकित किया गया है। साथ ही तिरिछ राम सजीवन की प्रेमकथा, हीरालाल का भूत कहानियों में सामाजिक त्रासदी के साथ, प्रथा परंपराओं से जुड़े वातावरण और कुप्रथाओं के साथ शिक्षा क्षेत्र के उच्चतम सोपान विश्वविद्यालयीन वातावरण को भी दर्शाया गया है।

उदय प्रकाश का तीसरा कहानी संग्रह 'और अंत में प्रार्थना', में कहानी यों के माध्यम से आत्मकथाओं को दर्शाया गया है। इस कहानी संग्रह में सिर, दीवार गंगू नरक, नौकरी, आचार्य की कराह, सायरन, सही उत्तर उर घर, चित्र शांति, अभिनय है। इस संग्रह में आत्मकथाओं के माध्यम से वर्तमान तथा भुत के यथार्थ को एकत्र करके उसमें से मानव हित का संदेश देते हुए योग्य-अयोग्य की



प्रेरणा देती कहानियों समाविष्ट है। आत्मकथा शब्द में हि एक विशिष्ट चरित्र का बोध होता है। कुछ वैसे हि हर एक कहानी एक विशिष्ट पात्र या चरित्र के इर्द गिर्द घुमती नजर आती है।

उदय प्रकाश का चौथा कहानी संग्रह "पॉल गोमेरा का स्कूटर है। इस कहानी संग्रह की प्रमुख कहानीयाँ है छतरियाँ, पॉल गोमेरा का स्कूटर' वॉरेन हैस्टिंग्स का सांड आदि। यहाँ यह जान लेना आवश्यक है की अंग्रेजी नाम जब किसी कहानी के हो तो कही ना कही अंग्रेजी ताना - बाना इन कहानीयों में व्याप्त है और सचमुच ऐसा ही परिदृश्य पॉल गोमेरा का स्कूटर कहानी संग्रह में देखने को मिलता है।

पाँचवा कहानी संग्रह 'पिली छतरी वाली लड़की' है। यह कहानी कम उपन्यास अधिक लगता है, क्योंकि इसमें एक लंबी कहानी है। होस्टेल की जिंदगी का वर्णन उक्त कहानी में व्याप्त है, साथ ही विश्वविद्यालय का प्रशासन तथा गुंडागर्दी के साथ अंतरजातिय विवाह का चित्रण और उसमें से उत्पन्न होनेवाला विरोध का सजीव चित्रण इस कहानी में व्याप्त है।

उदय प्रकाश का छठा कहानी संग्रह 'दत्तात्रेय के दुःख है। इस संग्रह में कुल सोलाह कहानीयों है। जिनमें प्रमुख है, 'इतिहास और समाजशास्त्र', 'दत्तात्रेय का दुःख', 'विनायक का अकेलापन', 'मिलना जुलना', 'खराब कलम', 'श्रीमान भाववादी सायकिल' आदि। हर एक 'कहानी में दत्तात्रेय का चरित्र गढ़ा गया है।

उदय प्रकाश का अंतिम कहानी संग्रह 'मोहनदास' नाम से छपा है। 'मोहनदास' में केवल एक ही कहानी है। मोहनदास कोयले के खान में नौकरी करने के लिए आवेदन देता है। वह नौकरी पर नहीं लिया जाता पर मोहनदास को पता चलता है की उसी के नामपर कोई अन्य खान में नौकरी कर रहा है। मोहनदास इस के खिलाफ न्याय मांगता है पर उसे काफी तकलीफ होती है।

उदय प्रकाश के काव्य संग्रह :

- 1) बात सुनो कारीगर 2) अबुतर-कबुतर 3) रात में हारमोनियम, 4) एक भाषा हुआ करती है
- आदि काव्य संग्रह के माध्यम से उदय प्रकाश ने आम समाज के यथार्थ को पेश किया। 'सुनो कारीगर काव्य - संग्रह में 'पिता' कविता में वे लिखते हैं।



'पिता पहाड़ की तरह, चलते भीड़ के बीच, उनके कंधे पर मैं, जंगली तोते की तरह बैठा रहता, बाद में पिता गायब हो गये। कहते हैं, खेत, कुदाल, बैल, इमारतें, इटें, दरवाजे, बाजार, उन्हें पचा गये।

उदय प्रकाश का द्वितीय काव्य संग्रह की 'अबुतर-कबुतर' की कविता 'तानाशाह की खोज' में वे लिखते हैं, "वह अभी तक सोचता है, कि तानाशाह बिल्कुल वैसी ही था फिर उससे मिलता - जुलता ही होगा। यानी मुँछ तितली, कट, नाक कें नीचे बिल्ले-तमगे और भीड़ को सम्मोहित करने की वाकपटुता जबकि अब होगा यह, कि वह पहले ऐसा तो होगा नहीं।"

रात में हारमोनीयम उदय प्रकाश का तृतीय काव्य संग्रह है। अन्य काव्य संग्रह से उक्त काव्य संग्रह अधिक लोकप्रिय हुआ। इस काव्य संग्रह की अंतिम कविता की कुछ पक्तियाँ इस प्रकार हैं, "मंदिर-मस्जिद, हम गुरुद्वारा, हम मठ, हम रात्री।

आखत-रौली, अलक-भूभती, रूप घरे हम जाना। हम है ताना, हम है बाना।

हम ही चदरिया, हम जुलाहा, हम गजी, हम थाना।"

उदय प्रकाश के चौथे काव्य संग्रह 'एक गाथा हुआ करती है, में कुल 38 कविता व्याप्त है। इसकी एक कविता में 'एक जल्दबाज बुरी कविता में वे लिखते हैं, 'कविता का एक वाक्य लिखने में दो मिनट लगते हैं-इतनी देर में चालीस हजार बच्चे मर चुके होते हैं। ज्यादातर तीसरी दुनियाँ के भुख और रोग से।

उदय प्रकाश का अनुदित साहित्य :

उदय प्रकाशनें अन्य भाषा में लिखे गए साहित्य का अनुवाद किया जिसमें कला अनुभव, इंदिरा गांधी की अखिरी लड़ाई, लाल घासपर नीले घोड़े, रोम्या रोला का भारत, चाय से बना सेंरा महत्त्वपूर्ण हैं।

उदय प्रकाश की फिल्म कथाएँ :

उदय प्रकाश के साहित्य पर ताना-बाना, बिन्नी का खजाना, कृषि कथा-कथा श्रृंखलाएँ, कई वृत्त, पटकथा एवं संवाद लिखे और उनका मोहनदास नामक फिल्म भी निर्माणाधीन है।



उन्हें उनके साहित्यिक, अवदान के उपलक्ष में कई पुरस्कारों से भी नवाना गया-जैसे भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार ओमप्रकाश, साहित्य सम्मान, श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान, गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान, सद्भावना पुरस्कार और रूस का पुष्किन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष :

उदय प्रकाशजी निश्चित ही अपने साहित्यिक अवदान के कारण हिंदी के समकालीन कहानीकारों में और कवियों में अपना स्थान बना चुके हैं। वे एक सफल कथाकार, कवि अनुवाद और फिल्म कथाकार बनकर उभरे। वे पाठक की चेतना जगानेवाले साहित्यकार हैं उन्होंने समाज की बुराई को लताडने में कोताई नहीं बरती ना ही समाज की अच्छाई को अधोरेखित करते उसमें अतिशयोक्ति को अपनाया। वे समाज के सम्मुख बुराई अच्छाई का ताना-बाना बुनने वाले साहित्यकार हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा आधुनिक हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर है।

संदर्भ सूची :

1. उदय प्रकाश, ताना-बाना - वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. डॉ. देवकीनंदन खत्री, - समकालीन कहानीकार उदय प्रकाश- विद्या प्रकाशन, कानपुर
3. डॉ. परमानंद श्रीवास्तव - समकालीन कविता का यथार्थ
4. डॉ. संगीता राहुल यादव - उदय प्रकाश का कहानी साहित्य : संवेदना और शिल्प
5. उदय प्रकाश का समग्र प्रकाशित साहित्य